भारत सरकार
संस्कृति मंत्रालय

लोक सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या 168
उत्तर देने की तारीख 21.07.2025

पुराने सांस्कृतिक लोक नृत्यों को बढ़ावा देना

168. श्रीमती मालविका देवी :

क्या संस्कृति मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) सरकार द्वारा सरायकेला और खरसावां के चाप नृत्य, कालाहांडी के घुमरा आदि जैसी भारतीय संस्कृति को प्रोत्साहन देने के लिए उठाए गए/उठाए जा रहे कदमों का ब्यौरा क्या है;

(ख) क्या सरकार की पुरानी सांस्कृतिक लोक नृत्यों को जीवित रखने और भावी पीढ़ियों के लिए उन्हें प्रोत्साहन देने के लिए कोई सरकारी संस्थान खोलने की योजना है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और

(ग) सरकार द्वारा इन पुराने लोक नर्तकों को कुछ पेंशन सुनिश्चित करने के लिए उठाए गए/उठाए जा रहे कदमों का ब्यौरा क्या है?

उत्तर

संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री
(गजेन्द्र सिंह शेखावत)

(क): सरायकेला और खरसावां के चाप नृत्य, कालाहांडी के घुमरा नृत्य आदि जैसी भारतीय संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए, भारत सरकार ने पूर्वी क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र (ईजेडसीसी) की स्थापना की है जिसका मुख्यालय कोलकाता में स्थित है, जिसने विगत पाँच वर्षों में सरायकेला और खरसावां के चाप नृत्य और कालाहांडी के घुमरा नृत्य से संबंधित निम्नलिखित मुख्य सांस्कृतिक कार्यकलापों का आयोजन करने के साथ-साथ उनमें भागीदारी भी की है:-

- घुमरा नृत्य मंडली ने 16-18 नवंबर, 2024 को कोरापुट, ओडिशा में आयोजित परब जनजातीय नृत्य महोत्सव में भाग लिया।

- कालाहांडी, ओडिशा में 16 नवंबर, 2024 को 'विलुप्त लोक एवं जनजातीय कला उत्थान महोत्सव' के दौरान घुमरा नृत्य प्रस्तुति।
- खरसावां, झारखंड में 18-19 अक्टूबर, 2024 को छऊ नृत्य कला केंद्र, खरसावां, झारखंड के सहयोग से छऊ महोत्सव।
- आजादी का अमृत महोत्सव के अवसर पर छऊ नृत्य कला केंद्र, खरसावां, झारखंड के सहयोग से 4-5 जनवरी, 2023 को खरसावां, झारखंड में सांस्कृतिक उत्सव (पारंपरिक संगीत और नृत्य महोत्सव)।

- ओडिशा के नबरंगपुर जिले में दिसंबर, 2023 में आयोजित मोंडेई-2023 में घुमरा नृत्य मंडली ने प्रस्तुति दी।
- 15 अगस्त, 2022 और 2023 को उत्कल विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर, ओडिशा में स्वतंत्रता दिवस समारोह के दौरान घुमरा नृत्य प्रदर्शन।
- घुमरा नृत्य मंडली ने 4-6 जनवरी, 2022 को ओडिशा के संबलपुर में आयोजित 27 वें संबलपुर लोक महोत्सव में भाग लिया।
- चंदनकियारी, झारखंड में 26-28 दिसंबर, 2021 तक छऊ चौपाल, चंदनकियारी, झारखंड के सहयोग से छऊ नृत्य महोत्सव।
- 26 जनवरी 1999 को गणतंत्र दिवस परेड के दौरान भी घुमरा नृत्य प्रस्तुति पेश की गई।

(ख): भारत सरकार ने पुराने सांस्कृतिक लोक नृत्यों सहित लोक कला और संस्कृति के विभिन्न रूपों के संरक्षण, संवर्धन एवं परिरक्षण हेतु पटियाला, नागपुर, उदयपुर, प्रयागराज, कोलकाता, दीमापुर और तंजावुर में मुख्यालयों सहित सात क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र (जेडसीसी) स्थापित किए हैं। ये क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र देश भर में नियमित रूप से विभिन्न सांस्कृतिक कार्यकलापों और कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं, जिसके लिए वे पूरे भारत से लोक कलाकारों को शामिल करते हैं जो इन कार्यक्रमों के दौरान अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हैं।

इसके अलावा, संस्कृति मंत्रालय अपने क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्रों (जेडसीसी) के माध्यम से देश भर से बड़ी संख्या में लोक कलाकारों को मंच प्रदान करते हुए राष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्रीय संस्कृति महोत्सव (आरएसएम) का आयोजन भी करता है। अब तक, संस्कृति मंत्रालय द्वारा

देश भर में 14 राष्ट्रीय संस्कृति महोत्सव और 4 क्षेत्रीय स्तर के राष्ट्रीय संस्कृति महोत्सव आयोजित किए जा चुके हैं।

पुराने सांस्कृतिक लोक नृत्यों एवं अन्य कला रूपों को बनाए रखने और भावी पीढ़ियों के लिए उन्हें प्रोत्साहित करने हेतु, संस्कृति मंत्रालय ने बहुआयामी दृष्टिकोण अपनाया है। इस प्रयास का मुख्य आधार **गुरु-शिष्य परंपरा स्कीम** है जिसे क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्रों (जेडसीसी) के माध्यम से कार्यान्वित किया जाता है। यह स्कीम पारंपरिक गुरुकुल शैली में दुर्लभ कला परंपराओं को वयोवृद्ध कलाकारों से युवा पीढ़ी तक पहुँचाने में सहायक है। गुरुओं और उनके शिष्यों को संरचित वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है, और चयनित शिष्यों को विभिन्न सांस्कृतिक उत्सवों और आयोजनों में प्रस्तुति देने का अवसर भी प्रदान किया जाता है, जिससे कला रूपों की व्यापक स्तर पर मान्यता और निरंतरता सुनिश्चित होती है।

इसके समानांतर, **अनुसंधान एवं प्रलेखन स्कीम** संगीत, नृत्य, रंगमंच, साहित्य और ललित कला जैसे विषयों में लुप्त हो रही दृश्य और मंच कलाओं के परिरक्षण और संवर्धन में सहयोग करती है। यह पहल इन परंपराओं को मुद्रित और दृश्य-श्रव्य, दोनों स्वरूपों में प्रलेखित करती है, और कला रूपों का चयन राज्य सांस्कृतिक विभागों के परामर्श से किया जाता है।

इसके अलावा, संस्कृति मंत्रालय ने क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्रों (जेडसीसी) के माध्यम से अक्टूबर, 2024 से मार्च, 2025 तक **विलुप्त लोक एवं जनजातीय कला उत्थान महोत्सव** का आयोजन किया। सभी सात सांस्कृतिक क्षेत्रों में संभागीय स्तर पर आयोजित यह महोत्सव वस्त्र मंत्रालय, राज्य सरकारों और शैक्षणिक संस्थानों का एक संयुक्त प्रयास था। इसमें हर सप्ताह 15-21 दिनों तक पारंपरिक कला रूपों का गहन प्रशिक्षण और अनुभव प्रदान करने वाली गहन कार्यशालाएँ आयोजित की गईं, जिससे देश के विविध कला रूपों को पुनर्जागृत करने तथा कायम रखने के लिए जीवंत मंच सृजित करने में सफलता मिली।

(ग): संस्कृति मंत्रालय "वयोवृद्ध कलाकारों को वित्तीय सहायता स्कीम" नामक एक स्कीम संचालित करता है जिसके अंतर्गत पात्र वयोवृद्ध कलाकारों को वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। इस स्कीम के पात्रता मानदंड निम्नानुसार हैं :

i. आवेदक कलाकार ने अपनी सक्रिय आयु में कला, साहित्य आदि के अपने विशिष्ट क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दिया हो या अभी भी योगदान दे रहा हो;

ii. . आवेदक कलाकार की आयु 60 वर्ष से कम नहीं होनी चाहिए;

iii. आवेदक की वार्षिक आय 72,000/- रुपये से अधिक नहीं होनी चाहिए;

iv. आवेदक कलाकार को संबंधित राज्य सरकार/संघ राज्य क्षेत्र प्रशासन से कम से कम 500 रुपये प्रति माह की कलाकार पेंशन प्राप्त होनी चाहिए या आवेदक कला संबंधी परिचय पत्र संबंधित क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र (जेडसीसी), संस्कृति मंत्रालय द्वारा सत्यापित और अनुशंसित होनी चाहिए; और

v. आवेदक कलाकार को संस्कृति मंत्रालय की किसी अन्य स्कीम के अंतर्गत वित्तीय सहायता प्राप्त नहीं होनी चाहिए।

विगत तीन वर्षों के दौरान 'वयोवृद्ध कलाकारों को वित्तीय सहायता स्कीम' के अंतर्गत कलाकारों को प्रदान की गई वित्तीय सहायता का विवरण निम्नानुसार है:

क्र. सं.	**वित्तीय वर्ष**	**वित्तीय सहायता (करोड़ रुपए में)**
I.	2022-23	15.42
II.	2023-24	18.59
III.	2024-25	26.09

****